Date - 13/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. -I (Hons.)

Topic - Mimamsa Philosophy

Scanned with CamScanner

मीमांसा - दर्शन

मीमांसकों के अनुसार ज्ञान स्वतः प्रामाण्य और परतः अप्रामाण्य होता है। वेदों को नित्य और अपौरुषेय मानने के कारण मीमांसक स्वतः प्रामाण्यवाद का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार जो कारण सामग्री ज्ञान को उत्पन्न करती है वही सामग्री उसके प्रामाण्य को भी साथ ही उत्पन्न करती है। ज्यों ही ज्ञान उत्पन्न होता है त्यों ही उसके प्रामाण्य का भी ज्ञान हो जाता है। इसके लिए कारण सामग्री से भिन्न अन्य तत्वों की आवश्यकता नहीं होती।

परन्तु मीमांसकों के अनुसार ज्ञान का अप्रामाण्य परतः होता है। मीमांसकों के अनुसार जब तत् सम्बन्धी ज्ञान पहली बार उत्पन्न होता है तब हम उसे सत्य और प्रमाणित मानते हुए आचरण करते हैं परन्तु जब हमें उसमें सफल प्रवृत्ति सामर्थ्य नहीं मिलता तो ज्ञान के अप्रामाण्य का परतः अनुमान कर लेते हैं।

मीमांसकों के अनुसार प्रामाण्य स्वाभाविक है, अप्रामाण्य अपवाद है। ज्ञान को स्वतः प्रामाण्य मानने के सम्बन्ध में कुमारिल और प्रभाकर भिन्न - भिन्न मत रखते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रभाकर

प्रभाकर के अनुसार ज्ञान स्वप्रकाश है। उसे अपनी अभिव्यक्ति के लिए किसी अन्य ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती। ज्ञान स्वयं को, ज्ञाता और ज्ञेय को प्रकाशित करता है। इसे ही 'त्रिपुटी-प्रत्यक्षवाद' कहा जाता है।

कुमारिल

कुमारिल का ज्ञान सिद्धान्त 'ज्ञाततावाद' के नाम से जाना जाता है। इसके अनुसार ज्ञान स्वप्रकाशित नहीं होता। ज्ञान केवल ज्ञेय विषय को प्रकाशित करता है। इसके अनुसार किसी विषय का ज्ञान होने पर उस पदार्थ में 'ज्ञातता' नामक धर्म की उत्पत्ति होती है। इसी ज्ञातता से पदार्थ के ज्ञान का प्रामाण्य सिद्ध होता है। चूँकि वस्तु का ज्ञान और वस्तु की ज्ञातता एक ही है, अतः ज्ञान स्वतः प्रामाण्य है।

आलोचना

(1) ज्ञान के प्रामाण्य की उत्पत्ति स्वतः नहीं हो सकती क्योंकि कारण और कार्य में भेद होना आवश्यक है। अतः ज्ञान अपना प्रामाण्य स्वयं नहीं उत्पन्न कर सकता।

(2) 'ज्ञातता' को स्वीकार करने पर अनवस्था दोष की उत्पत्ति होती है। यदि किसी भी विषय के ज्ञान के लिए ज्ञातता आवश्यक है तो फिर उस ज्ञातता के ज्ञान के लिए भी दूसरी ज्ञातता की आवश्यकता होगी। इस तरह हम ~~अनवस्था~~ अनवस्था दोष में फंस जाएँगे।

(3) यदि ज्ञान स्वतः प्रामाणिक है तो फिर बाद में उसके अप्रामाणिक होने का सवाल ही नहीं पैदा होना चाहिए। लेकिन मीमांसक परतः अप्रामाण्यवाद में विश्वास करते हैं।

Scanned with CamScanner